प्रस्तावना

नाटक आरम्भ से ही सर्वाधिक प्रभावशाली और लोकप्रिय विधा रही है । 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' उक्ति इसकी प्रमाण है । जीवन के श्रेय, प्रेम और हेय- सभी तत्त्वों को अपने भीतर समेट कर नाटककार मनुष्य की रागात्मक वृत्तियों की उद्भावना करता है । नाटक मानवजीवन की विभिन्न स्थितियों की अभिव्यक्ति का सब से सशक्त और लोकप्रिय माध्यम है । अपने आरम्भ में नाटक जहां धार्मिक अथवा आध्यात्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम रहा है वहाँ आधुनिक हिन्दी नाटक जीवन के विरोधाभासों, विसंगतियों, प्रतिदिन की बेतरतीब उलझनों, जीवनयापन की अनवरत अस्थिरताओं, व्यस्तता, हाहाकार,जीवन संघर्ष तथा मानवीय मनोभावनाओं के विश्लेषण की ओर उन्मुख हुआ है । आधुनिक नाटक वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन के प्रत्येक ज्ञात-अज्ञात तक पहुंचने के लिए क्रियाशील है ।

नाटक में आरम्भ से ही मेरी रुचि है । इधर चण्डीगढ़ प्रवास के दौरान कई नाटकों के मंचन देखने -समझने की प्रक्रिया में मेरी इस रुचि का उद्बोधन हुआ । अलग अलग शैलियों की नाट्य प्रस्तुतियां देखने और अनेक नाटक पढ़ने के उपरान्त मैंने अनुभव किया कि विभिन्न जातीय पुराख्यानों, पुरावृत्तों एवम् तत्सम्बन्धी विश्वासों से युक्त साहित्य के माध्यम से अर्थात् पौराणिक पात्रों या घटनाओं को माध्यम बना कर अपनी युगीन समस्याओं को बहुत सशक्त ढंग से अभिव्यक्त किया जा सकता है । इसी विचार से मेरे मन में हिन्दी के पुराख्यानात्मक नाटकों के विशिष्ट अध्ययन का बीजारोपण हुआ । इसी दृष्टि से जिज्ञासावश फुटकर अध्ययन करने पर मैंने देखा कि इतने महत्त्वपूर्ण विषय पर अभी तक कोई विशेष शोधकार्य नहीं हुआ । यद्यपि आधुनिक हिन्दी नाटक के अनेक पात्रों को ले कर कई विश्वविद्यालयों में महत्त्वपूर्ण कार्य हुआ या हो रहा है,परन्तु हिन्दी के पौराणिक नाटकों

2

के संदर्भ में इधर उधर बिखरी फुटकर टिप्पणियों के अतिरिक्त कोई ठोस कार्य नहीं मिला ।

- इस क्षेत्र में अब तक दो शोध ग्रन्थ मेरे देखने में आये । इनमें पहला है देवर्षि सनाढ्य का शोध प्रबन्ध - 'हिन्दी के पौराणिक नाटक' जिसपर अलीगढ़ विश्वविद्यालय ने पी०एच०डी० की उपाधि प्रदान की है । हिन्दी के पौराणिक नाटकों के कथ्य और शिल्प पर पहली पुस्तक होने के कारण इसकी सीमाओं का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है । लेखक स्वयं को हिन्दी के पौराणिक नाटकों के अध्ययन तक ही सीमित रख कर अपने विषय का अध्ययन प्रस्तुत करता तो अधिक उपयुक्त होता, किन्तु उसने संस्कृत के पौराणिक नाटकों को ही नहीं अपितु बंगला, मराठी, गुजराती, उर्दू, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम आदि उत्तर भारतीय भाषाओं के पौराणिक नाटक साहित्य को भी अपने अध्ययन में समेटने का प्रयास किया है । इससे विषय का अतिरिक्त विस्तार हो गया है । फलस्वरूप प्रस्तुतीकरण में स्पष्टता का अभाव है ।

इसके अतिरिक्त इस शोधकार्य की एक दूसरी मुख्य सीमा यह है कि इसमें प्रसाद युग के परवर्ती नाटकों पर विस्तार से विचार नहीं किया गया । अध्ययन मात्र भारतीय पुराणों के सन्दर्भ में ही हुआ है और उसके परम्परागत परिप्रेक्ष्य में परिणामस्वरूप उसे आधुनिक परिवेश का अपेक्षित सन्दर्भ प्राप्त नहीं हो सका है ।

- इस संदर्भ में दूसरा शोध प्रबन्ध शक्तिप्रभा शास्त्री का है जो जोधपुर विश्वविद्यालय द्वारा पी०एच०डी० की उपाधि के लिए स्वीकार किया गया है । नाटक के सम्बन्ध में लिखित अन्य शोध प्रबन्धों में पौराणिक नाटकों का उल्लेख तो हुआ है किन्तु पौराणिक नाटकों के मूल स्रोतों की ओर किसी का ध्यान नहीं गया । यह कार्य डा० शक्तिप्रभाशास्त्री ने अपने शोध प्रबन्ध द्वारा एक बड़ी सीमा तक पूरा कर दिया है ।

इन दो ग्रन्थों के अतिरिक्त शोध अथवा समीक्षा के क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं हुआ । इस दृष्टि से प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मेरा विनम्र मौलिक प्रयास है । इसमें मैंने भारतेन्दु युग से लेकर अत्याधुनिक पुराख्यानात्मक नाट्य-कृतियों का अध्ययन करके हिन्दी के आधुनिक पुराख्यानात्मक नाटकों के कथ्य का विवेचन करने का प्रयास किया है । पुराण के स्थान पर पुराख्यान शब्द का प्रयोग हमने अपने प्रबन्ध विषय के अनुकूल किया है । पुराख्यान में पुराणकथा के अतिरिक्त उसके अन्य समीपस्थ तथा समानधर्मा उपादानों--निजंधरी कथा, पुरावृत्त, प्राचीन लोकवृत्त, मिथ अथवा मिथक आदि का अन्तर्भाव पुराख्यान में स्वत: ही आता है । यह प्रयोग हमने विषय परिसीमाओं के अपेक्षित विस्तार तथा उसके प्रतिपादन की अपेक्षित सुविधा को सामने रख कर किया है । प्रबन्ध आठ अध्यायों में विभाजित किया गया है, प्रथम अध्याय में पुराख्यान तत्त्व तथा नाटक के सैद्धान्तिक निरूपण के साथ साथ पुराख्यान तथा मिथक, पुराख्यान और इतिहास, पुराख्यान तथा मनोविज्ञान, पुराख्यान जीवन और साहित्य आदि अनेक विषयों पर सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है । द्वितीय अध्याय में आधुनिक काल का परिवेश प्रस्तुत करते हुए समग्र हिन्दी नाटक के विकास क्रम को दिखाया गया है । विभिन्न सांस्कृतिक मान्यताओं के साथ आधुनिक युग में उपस्थित विराट् संक्रमण का विश्लेषण इस अध्याय की विशेषता है । इससे नाटक का परिवेश पूरी तरह समझ में आ जाता है । तीसरे अध्याय में आधुनिक काल से पूर्व रचित नाटक साहित्य को उसकी पुराख्यानात्मक पृष्ठभूमि के साथ प्रस्तुत किया गया है । संस्कृत नाटक का आधार तो अधिकांशत: पुराख्यान तत्त्व ही था । उसके समानान्तर आधुनिक हिन्दी नाटक में भी उसी आधार को ग्रहण किया गया है । इससे एक तुलनात्मक तथा विकासात्मक रूप सामने आता है । चतुर्थ अध्याय में आधुनिक हिन्दी नाटक के अवतरित प्रमुख पात्रों के पूर्व रूप को देखने का प्रयास किया गया । यहाँ उन्हीं पात्रों के पुरारूप की खोज की गई है जो किसी न किसी रूप में आधुनिक हिन्दी नाटक की आधारभूमि रहे हैं । इससे अवतरित पुराख्यान तत्त्व का सम्पूर्ण परम्परागत एवम् प्रतिपरक रूप सामने आ जाता है ।

पाँचवें अध्याय में कृष्णकथाश्रित आधुनिक हिन्दी नाटकों के स्वरूप का विवेचन किया गया है । छठे अध्याय में रामाख्यान की प्राचीनता एवं इस युग में राम सम्बन्धी जिन नाटकों की रचना हुई उन पर विचार किया गया है । साथ ही यह भी दिखाया गया है कि इस युग में रचित नाटक रंगमंचीय दृष्टिकोण से उपयुक्त न होने पर भी लोकप्रिय हो जाते थे ।

सातवें अध्याय में विभिन्न पुराणकथाओं पर आश्रित हिन्दी नाटकों को प्रस्तुत किया गया है । इस अध्याय में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि विभिन्न नाटककारों ने महाभारत एवं रामायण के अतिरिक्त अन्य पुराणों से भी कथा का आधार ग्रहण किया था । इन पौराणिक नाटकों के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि मानव जीवन से सम्बन्धित कोई भी विषय ऐसा नहीं है जो पुराणों में प्राप्त न होता हो ।

आठवें अध्याय में पुराख्यानाश्रित नाटकों में अवतरित प्रमुख पुरापात्रों से सम्बन्धित पात्र हैं । यह प्रमुख पुरापात्र रामचरिताश्रित, कृष्ण चरिताश्रित, महाभारत एवं अन्य प्रमुख पुराणों से सम्बद्ध पात्र हैं । अन्त में उपसंहार तथा पुस्तक सूची का समावेश किया गया है ।

मेरा यह प्रयास तथ्यों का सही सही विश्लेषण करने में कहां तक सफल है यह तो सुधी विद्वान ही बता सकेंगे ।

इस कार्य को सम्पन्न करने में जिन संस्थाओं एवं व्यक्तियों की मुझे सहायता मिली है उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है । पंजाब विश्वविद्यालय के वर्तमान विभागाध्यक्ष डा० धर्मपाल मैनी का शुभाशीर्वाद एवं प्रोत्साहन मेरे समस्त शोधकार्य का सम्बल है । मैं उनके प्रति आभार प्रकट करना अपना कर्तव्य समझती हूं । मेरे इस शोधकार्य के निर्देशक डा० लक्ष्मी नारायण शर्मा के प्रति भी आभारी हूं जिनके विद्वतापूर्ण, सतत, जागरूक और सदा सुलभ निर्देशन एवं

स्नेहपूर्ण प्रोत्साहन के बिना यह कार्य सम्भव न हो पाता । मेरे शोधकार्य के लिए 'आधुनिक हिन्दी नाटक में पुराख्यान तत्व' इस विषय के चुनाव में भी उन्होंने मेरी बहुत सहायता की है ।

इसके अतिरिक्त पंजाब विश्वविद्यालय के पुस्तकालय, पंजाब विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पुस्तकालय एवं दिल्ली विश्वविद्यालय विभाग के कर्मचारियों के प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापन करना चाहूँगी ।

टंकण सम्बन्धी त्रुटियों से बचने का और संशोधन करने का यथासम्भव प्रयत्न करने पर भी यदि कुछ अशुद्धियां रह गई हों तो उनके लिए क्षमाप्रार्थी हूं ।

स्नेह लता सामा

श्री (Mrs.) स्नेहलता सामा